सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का एकादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित ''क्या राम ने सीता परित्याग किया था'' सांस्कृतिक पर्यालोचन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। तत्पश्चात् वैद्य गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'वैद्यविनोदसंहिता समीक्षा' लेख आयुर्वेद के अपरिज्ञात ग्रन्थ के विषय में जानकारी प्रदान करता है। लेखक ने इके महत्त्व एवं इसमें प्रतिपादित विशिष्ट लोकोपकारक योगों का भी उल्लेख किया है। तृतीय लेख नवीन जोशी द्वारा लिखित 'पाण्डुलिपि संरक्षण के विविध उपागम' पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण तथ्यों का प्रतिपादन करता है। इसमें पाण्डुलिपियों की संरक्षण की विधियों के संदर्भ में क्रियात्मक जानकारी प्रदान की गयी है। डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'पृथ्वी एवं सूर्य में पौर्वापर्यविषयक सिद्धान्त' लेख में पृथ्वी एवं सूर्य के सृष्टिक्रम के विषय में महर्षि याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, महर्षि भरद्वाज एवं विश्वकर्मा के सिद्धान्तों द्वारा वेद विज्ञान के रहस्यों को प्रस्तुत किया गया है अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा